भावी गौरवपूर्ण क्रांति की

भूमि बनेगा बिहार

आम तौर पर बिहार में सामूहिक चेतना का मूल तत्त्व राजनीति रहती है पर अब स्थिति में परिवर्तन होने लगा है। सामूहिक चेतना में आर्थिक विषय भी आने लगे हैं। विकास की बात भी होने लगी है। यह एक शुभ संकेत है। परिवर्तन का यह सकारात्मक और विकासोन्मुख संकल्प, बिहार की सार्वत्रिाक उ ति के लिए एक और क्रांति का मार्ग प्रशस्त करेगा। इस गौरवपूर्ण क्रांति का केंद्रीय मुद्दा 'शिक्षा और औद्योगिक विकास से समृद्धि की प्राप्ति' होगा।

आज पूरे राष्ट्र में नव चेतना की एक विचार–क्रांति चल रही है। बिहार भी इससे अछूता नहीं है। बिहार से जुड़ी जड़ता की अवैध धारणा अब टूट रही है। यहां प्रत्येक क्षेत्रा में परिवर्तन की इच्छा स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही है। परिवर्तन और क्रांति में बड़ा निकट का संबंध है। परिवर्तन जब बहुत अधिक उत्साह और ऊर्जा के साथ किया जाता है, तो वह क्रांति का रूप ले लेता है।

बिहार, 21 वी शताब्दी के आरंभ में एक अत्यंत गौरवपूर्ण–क्रांति से गुजरने वाला है। इस गौरवपूर्ण क्रांति का केंद्रीय मुद्दा 'शिक्षा और औद्योगिक विकास से समृद्धि की प्राप्ति' होगा। यह एक क्रांतिकारी परिवर्तन होगा, जो बिहार के भविष्य को पूर्ण रूप से बदल डालेगा। इसे 'बिहारी चेतना की गौरवपूर्ण क्रांति' कहना उचित होगा।

बिहार के पिछड़ेपन का एक बहुत बड़ा कारण, इसकी सामूहिक–चेतना में राजनीतिक तत्त्वों की प्रधानता का होना रहा है। जब भी चार–पांच लोग कहीं समूहबद्ध होते हैं, तो उनकी अनौपचारिक या औपचारिक चर्चा की दिशा मुख्यतः राजनीतिक बातों द्वारा ही निर्धरित होती है। बहुधा, राजनीतिक बातें ही चर्चा का केंद्र बिंदु होती हैं। यह बात आर्थिक विकास को अवरुद्ध करती है। आर्थिक रूप से समृद्धि राज्यों, जैसे गुजरात, महाराष्ट्र आदि की सामूहिक चेतना में

आर्थिक तत्त्वों की प्रधानता होती है। आशाजनक रूप में, अब बिहार की सामूहिक चेतना में भी आर्थिक व विकासोन्मुख तत्त्वों का समावेश हो रहा है। स्थायी व आधरभूत विकास के लिए यह एक आवश्यक शर्त है।

आज पूरे विश्व में भौतिक विकास अपने चरम पर है। भौतिकता के चरम विकास के बाद ही आत्मिक विकास का सूत्रापात होता है। भौतिकता के चरम पर बिन्दु पहुंची पूरी पश्चिमी सभ्यता अब आध्यात्मिकता के प्रथम–बिंदु पर पहुंचने वाली है। यह बात हमारे लिए बड़ी प्रेरणास्पद है। पश्चिम का उदाहरण यह बताता है कि भौतिक विकास के इस चरम पर भी भारत आध्यात्मिकता के क्षेत्र में विश्व गुरु रहा है और आज भी है। हमारे यहां के अध्यात्मवेत्ताओं जैसे बुद्ध, शंकराचार्य आदि ने तो पूरे विश्व को प्रभावित किया है।

इक्कीसवीं सदी में जिस आध्यात्मिक क्रांति का सूत्रापात होगा, उससे बिहार का विकास संभव होगा। बिहार, आध्यात्मिकता और योग के क्षेत्रा में भारत के प्राचीन स्वर्णिम अतीत का सपफलतापूर्वक प्रतिनिध्त्वि करेगा। मार्क्सवाद जैसी अवैज्ञानिक, भौतिकवादी अवधारणा की समाध्ि स्थली, प्रथम मार्क्सवादी देश में ही बन जाना, इस संदर्भ में प्रेरक है। आज पाश्चात्य देश,जो अपने आपको सभ्यता के चरम पर मानते है, वे भी भारत के अति प्राचीन परामनोवैज्ञानिक तथा योग संबंधे ज्ञान पर शोध् कर रहे हैं। इतना ही नहीं, वे हमारे प्राचीन ज्ञान को स्थापित भी कर रहे है। पाश्चात्य सभ्यता का चरम वैज्ञानिक ज्ञान 'क्वाण्टम भौतिकी' प्राचीन भारतीय दर्शन के पदार्थ की अवधरणा को ही पुष्ट करता है। क्वांटम भौतिकी का यह कहना है कि पदार्थ के अस्तित्व के आधर के रूप में, ऊर्जा का एक कण अस्तित्वावान् है और ऊर्जा के उसी कण के कारण पदार्थ का अस्तित्व है। अतः पदार्थ की सत्ता आत्यंतिक नहीं है। यह सिद्धांत भारतीय अध्यात्म की पुरानी अवधरणा की ही पुनरावृत्ति है। आधुनिक विज्ञान की यह सर्वोत्तम विद्या जिसे 'क्वांटम भौतिकी' कहा जाता है, शंकराचार्य व उपनिषदों के ब्रह्मवाद के एक अद्‌भुत साक्ष्य के रूप में सामने आयी है। अत्यंत उच्च वैज्ञानिक ज्ञान पर आधरित इस विद्या के सारे अध्ययन, हमारे प्राचीन आध्यात्मिक ज्ञान

को ही संपुष्ट करते हैं। ये सारी बातें नयी सदी में बिहार को, पाश्चात्य भौतिकवाद के अंधानुकरण से बचानेवाली हैं और आध्यात्मिक ज्ञान को पिफर से प्रतिष्ठित करनेवाली हैं।

नयी सदी के बिहार का विकास इसकी शिक्षा और साक्षरता से जुड़ा है। शिक्षा मेंविकास भी अवश्यम्भावी है। पर, यह विकास इसके परिवर्तित स्वरूप में होगा। आधुनिक युग में यह स्वरूप बाध्यकारी रूप में, व्यावसायिक और व्यावहारिक शिक्षा का होगा। इसके अनेक लाभ सामने आयेंगे। जैसे, कृषि–आधरित शिक्षा का व्यावहारिक प्रयोग, बिहार को कृषि क्षेत्रा में अग्रणी भूमिका दिलायेगा। शिक्षा का स्वरूप अध्कि वैज्ञानिक होगा। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षित वर्ग की सामूहिक–चेतना, अध्कि से अधिक सरकारी अध्किारी बनने पर केंद्रित है। ऐसी शिक्षा से जो प्रतिभा तैयार होती है, वह यहां अपने प्रभावी उपयोग का अवसर नहीं देख, अन्यत्रा पलायन कर जाती है। प्रतिभा–पलायन को, प्रतिभा की बेहतर परवरिश और पफलने–पफूलने का अवसर देकर, रोका जा सकता है। नयी सदी के प्रथम चरण में, जिस आध्यात्मिकता–निर्देशित–क्रांति का सूत्रापात होगा, वह बिहार के सुदृढ़ और क्रमिक विकास का स्पष्ट कारण बनेगी। 1917 की चंपारण–क्रांति को उस समय के लोगों ने एक घटना या ज्यादा से ज्यादा एक साहसपूर्ण कार्य ही माना होगा। पर, इस क्रांति में ही आजादी के बीज थे। दो सौ सालों से गुलाम इस देश को, इस क्रांति के बीज ने, मात्रा तीस वर्षो में स्वाधीनता दिला दी। ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि यह क्रांति, गांधी जैसे अध्यात्म निर्देशित व्यत्तिफ के नेतृत्व में प्रारंभ हुई थी। अतः इसकी सपफलता पूर्व निश्चित थी। बिहार नयी सदी में, एक क्रांति का सूत्राधर बनेगा, जो पूरे देश और विश्व पर भी अपना अमिट प्रभाव छोड़ेगा। इस क्रांति की सपफलता में कोई संदेह इसलिए भी नहीं होना चाहिए, क्योंकि क्रांति का मूल लक्ष्य परिवर्तन है और परिवर्तन का संकल्प आज बिहार के आम लोगों का संकल्प है। परिवर्तन का यह सकारात्मक और विकासोन्मुख संकल्प बिहार की सार्वत्रिाक उ ति के महावट का एक बीज है और यह बीज किसी भी स्थिति में नष्ट नहीं हा सकता। इस बीज का एक महावृक्ष बन जाना ही नियति है।

हमारे औद्योगिक विकास के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता सकारात्मक पूंजी का निवेश है। यह वहीं संभव है, जहां कानून व व्यवस्था की स्थिति बेहतर हो। हालांकि बिहार में कानून–व्यवस्था की स्थिति उतनी बुरी नहीं, जितनी प्रचारित–प्रसारित की जाती रही है। इस मामले में, प्रचार के अन्य स्रोतों की तुलना में, हम बिहार–वासियों द्वारा स्वयं के विरुद्ध दुष्प्रचार ही ज्यादा जिम्मेदार है। आज पंजाब की कृषि तमाम तकनीकी प्रगति के बाद भी, बिहार के श्रमिकों की कार्यकुशलता पर पूर्णतः निर्भर है। महाराष्ट्र और गुजरात की औद्योगिक संप ता में बिहारी–श्रम का योगदान कोई छिपी बात नहीं है। यह लज्जा की नहीं, गर्व की बात होनी चाहिए । जो काम हम दूसरे प्रदेशों में करते हैं, वही काम अपने प्रदेश में करके, हम इसे आर्थिक रूप से उ त बना सकते हैं। इस सारी स्थिति को सकारात्मक रूप में प्रचारित करने की जरूरत है। भारत ही नहीं विश्व जनमत को भी बिहार की श्रम शत्तिफ और कानून व्यवस्था की वास्तविक स्थिति से अवगत कराने की आवश्यकता है। इससे बिहार में सकारात्मक पूंजी का प्रवाह होगा जो इसके आर्थिक विकास में सहायक होगा। घोटाले और भ्रष्टाचार के अन्य तरीकों से राज्य की पूंजी का अन्य स्थानों पर प्रवाह रोकना भी अगली सदी में हमारी जिम्मेदारी होगी। इस प्रकारके ध्न का उपयोग अत्यंत पिछड़े वर्गों की आजीविका के लिए, रोजगार सृजन हेतु, किया जा सकता है। पेयजल की व्यवस्था के संदर्भ में, अमेरिका में इस समस्या से निबटने के लिए किये जा रहे उपायों पर दृष्टि डालने की जरूरत है। अमेरिका में नालियों में बह रहे गंदे पानी को पुनर्शोषित कर पीने योग्य बनाये जाने की परियोजना पर काम चल रहा है। हमें अपने प्राचीन आध्यात्मिक दर्शन का अनुकरण करते हुए जल–स्रोतो के प्रति देव–भाव को पुनर्स्थापित करना होगा। आज भी हमारे यहां जल– ोतों के प्रति कम से कम, ग्रामीण इलाकों में, देव–भाव देखा जा सकता है।

जातिवाद और लिंग भेद, राजनीति–जनित अवधरणाएं हैं। और, संक्रमण के इस काल में जब सामूहिक–चेतना का केंद्र राजनीति की जगह विकास की ओर अग्रसर हो रहा है, जातिवाद और लिंग भेद का कमजोर पड़ना निश्चितप्राय है। सबसे नकारात्मक तत्त्व, जिसने बिहार के

विकास को बाध्ति किया है, वह हमारा सांस्कृतिक रूप से प्रदूषित हो जाना है। पर, आनेवाले दिनों के बिहार में, एक जन–संकल्प, इसके प्रतिवाद के रूप में उठेगा। यह जन–संकल्प ही आज सर्वत्रा विद्यमान सांस्कृतिक प्रदूषण को समाप्त करेगा। यह उस देश के लिए, जहां कुमारी पूजन जैसी भावना प्रचलित थी और कुछ अर्थो में आज भी है, एक बहुत ही अच्छी बात होकगी। छोटे बच्चों के यौन–शोषण जैसी विकृति का इस देश या राज्य की मूलभूत प्रकृति से सीध विरोधभास है। यह भूमि, कुमारी पूजन जैसी पवित्रा भावना से, बालकों में देव–भाव देखनेवालों की भूमि है। यहां ऐसी विकृति नहीं टिक पाएगी।

नई सहड्डब्दी–2000 की पूर्व सन्ध्या पर 'प्रभात खबर' दैनिक के सम्वाददाता से की वार्त्ता के बाद दिसम्बर 1999 में 'प्रभात खबर' दैनिक में प्रकाशित वार्त्ताद्ध